UGC Approved Journal
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 02 | April - June 2017

हिंदी सहित्य में गांधी विचारधारा की आवश्यकता का अध्ययन

Dr. Anita kumari

Assistant Professor in Hindi

Vaish college of law, Rohtak

सार

गांधी जीवन और विचारधारा एक समाजवादी एवं अहिंसक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करते हैं जो आज के समाज को आधुनिक युग में भी अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक युग में सामाजिक जीवन बहुत ही व्यस्त और तनावपूर्ण है जो लोगों को बहुत से चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। गांधी जीवन और विचारधारा में अहिंसा का सिद्धांत आज के समय में बहुत जरूरी है। लोग अपने आप को सामाजिक दबावों, स्तरणों और स्थितियों में पाने के लिए बाध्य महसूस करते हैं, इसलिए अहिंसा का सिद्धांत उन्हें एक सुलझा हुआ मार्ग दिखा सकता है। गांधी जी के आधुनिक सोच में समाज के सभी वर्गों के लिए समानता और समाज की पहुंच को बढ़ाने का संदेश होता है। आज के समय में भी, असमानता का मुद्दा एक बड़ी समस्या है जो समाज के विभिन्न वर्गों में नाराजगी और द्वंद्वों को बढ़ाती है। गांधी जी के आधुनिक सोच को अपनाकर, समाज की असमानता को कम करने के लिए समाज में स्वच्छता एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता का बढ़ता महत्व भी गांधीजी के आधुनिक सोच के अनुसार है। आज के युवाओं को इस मुहिम को आगे बढ़ाने और वास्तविकता के साथ एक स्वच्छ वातावरण बनाए रखने की जरूरत है।

मुख्य शब्द : वर्तमान, युग, गांधी विचारधारा, वातावरण आदि ।

प्रस्तावना

गांधीवादी विचारधारा सिद्धांतों और मूल्यों का एक समूह है जिसे महात्मा गांधी द्वारा विकसित किया गया था, जो भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख नेता थे। यह एक ऐसा दर्शन है जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रगति प्राप्त करने के साधन के रूप में अहिंसा, सत्य, प्रेम और आत्मनिर्भरता पर जोर देता है। गांधी की शिक्षाएँ उनके धार्मिक विश्वासों और एक वकील, कार्यकर्ता और राजनीतिक नेता के रूप में उनके अनुभवों से प्रभावित थीं। गांधीवादी विचारधारा के मूल सिद्धांतों में सभी मनुष्यों की अंतर्निहित गरिमा में विश्वास, सामाजिक न्याय और समानता का महत्व, व्यक्तिगत और सामूहिक आत्म-संयम की आवश्यकता, अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति और स्थायी जीवन की आवश्यकता शामिल है। . गांधी का मानना था कि

ये सिद्धांत एक अधिक न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण समाज बनाने में मदद कर सकते हैं, और उन्होंने जीवन भर उन्हें बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किया।

आज, गांधीवादी विचारधारा दुनिया भर के लोगों को प्रेरित करती है, विशेष रूप से सामाजिक न्याय, पर्यावरणवाद और शांति निर्माण के क्षेत्रों में। जबकि कुछ आधुनिक समय में गांधी के विचारों की व्यावहारिकता की आलोचना करते हैं, कई मानते हैं कि उनका दर्शन वर्तमान युग में प्रासंगिक और आवश्यक है। गांधीवादी विचारधारा का भारत के इतिहास और बड़े पैमाने पर दुनिया पर गहरा प्रभाव पड़ा है। अहिंसक प्रतिरोध के लिए गांधी की प्रतिबद्धता ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। असहयोग, सविनय अवज्ञा और शांतिपूर्ण विरोध की उनकी रणनीति ने दुनिया भर में सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए आंदोलनों को प्रेरित किया, जिसमें मार्टिन लूथर किंग जूनियर के नेतृत्व में अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलन भी शामिल था।

गांधीवादी विचारधारा

गांधीवादी विचारधारा महात्मा गांधी द्वारा अपनाई और विकसित की गई उन धार्मिक-सामाजिक विचारों का समूह जो उन्होंने पहली बार वर्ष 1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में तथा उसके बाद फिर भारत में अपनाई थी। गांधीवादी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है। यह कई पश्चिमी प्रभावों का प्रतीक है, जिनको गांधीजी ने उजागर किया था, लेकिन यह प्राचीन भारतीय संस्कृति में निहित है तथा सार्वभौमिक नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करता है।

यह दर्शन कई स्तरों आध्यात्मिक या धार्मिक, नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यक्तिगत और सामूहिक आदि पर मौजूद है। इसके अनुसार-

- आध्यात्मिक या धार्मिक तत्व और ईश्वर इसके मूल में हैं।
- मानव स्वभाव को मूल रूप से सद्गुणी है।
- सभी व्यक्ति उच्च नैतिक विकास और सुधार करने के लिये सक्षम हैं।
- गांधीवादी विचारधारा आदर्शवाद पर नहीं, बल्कि व्यावहारिक आदर्शवाद पर ज़ोर देती है।
- गांधीवादी दर्शन एक दोधारी तलवार है जिसका उद्देश्य सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों के अनुसार व्यक्ति और समाज को एक साथ बदलना है।
- गांधीजी ने इन विचारधाराओं को विभिन्न प्रेरणादायक स्रोतों जैसे- भगवद्गीता, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, बाइबिल, गोपाल कृष्ण गोखले, टॉलस्टॉय, जॉन रस्किन आदि से विकसित किया।

- टॉलस्टॉय की पुस्तक 'द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू' का महात्मा गांधी पर गहरा प्रभाव था।
- गांधीजी ने रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' से 'सर्वोदय' के सिद्धांत को ग्रहण किया और उसे जीवन में उतारा।
- इन विचारों को बाद में "गांधीवादियों" द्वारा विकसित किया गया है, विशेष रूप से, भारत में विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण तथा भारत के बाहर मार्टिन लूथर किंग जूनियर और अन्य लोगों द्वारा।

गांधी के सिद्धांतों की वर्तमान सामाजिक जीवन में महत्व :

- गांधी के अहिंसा और शांति के सिद्धांत
- गांधी के दर्शन में सरलता, समंजस्य और सहयोग
- गांधी की शिक्षाओं में आत्मनिर्भरता, धैर्य और सहिष्णुता
- गांधी के आर्थिक और स्वदेशी सिद्धांत
- गांधी के दर्शन में धर्मानुयायिता और विविधता का सम्मान
- गांधी के संदेश में लिंग समानता और महिला सशक्तिकरण
- स्वतंत्रता संग्राम और आधुनिक समय में स्वतंत्रता का महत्व
- गांधी के दर्शन में शिक्षा और शिक्षण की भूमिका
- गांधी के विचारों का आधुनिक राजनीति और सामाजिक आंदोलनों पर प्रभाव
- बेहतर दुनिया बनाने के लिए गांधी के संदेश का महत्व।

महात्मा गांधी: गांधीवादी विचारधारा के जनक

महात्मा गांधी, जिन्हें मोहनदास करमचंद गांधी के नाम से भी जाना जाता है, व्यापक रूप से गांधीवादी विचारधारा के पिता के रूप में पहचाने जाते हैं। 2 अक्टूबर, 1869 को पश्चिमी भारत के एक तटीय शहर पोरबंदर में जन्मे गांधी ने लंदन में कानून का अध्ययन किया और बाद में दक्षिण अफ्रीका में कानून का अभ्यास किया। दक्षिण अफ्रीका में अपने समय के दौरान, वह देश में भारतीयों द्वारा सामना किए जा रहे भेदभाव और नस्लवाद के खिलाफ संघर्ष में गहराई से शामिल हो गए। इस अनुभव ने उनके विश्वासों और मूल्यों को आकार दिया और उन्हें अहिंसा के एक अद्वितीय दर्शन को विकसित करने के लिए प्रेरित किया, जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की आधारशिला बन गया।

गांधी की विचारधारा उनके हिंदू पालन-पोषण से प्रभावित थी, विशेष रूप से अहिंसा या अहिंसा की अवधारणा, जिसके बारे में उनका मानना था कि इसे राजनीति और सामाजिक सुधार सहित

जीवन के सभी पहलुओं पर लागू किया जा सकता है। उन्होंने सत्य, सरलता और आत्म-अनुशासन के महत्व पर भी जोर दिया, जिसे उन्होंने व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तन के लिए आवश्यक माना। गांधी का मानना था कि इन सिद्धांतों का उपयोग उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद को चुनौती देने के साथ-साथ अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज बनाने के लिए किया जा सकता है।

आज के संदर्भ में प्रासंगिकता

सत्य और अहिंसा के आदर्श, जो पूरे दर्शन को रेखांकित करते हैं, सभी मानव जाति के लिए प्रासंगिक हैं, और गांधीवादियों द्वारा उन्हें सार्वभौमिक माना जाता है। पहले से कहीं अधिक, महात्मा गांधी की शिक्षाएं आज भी मान्य हैं, जब लोग बड़े पैमाने पर लालच, व्यापक हिंसा और भगोड़ा उपभोग की जीवन शैली का समाधान खोजने की कोशिश कर रहे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग, दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला और म्यांमार में आंग सान सू की जैसे लोगों के नेतृत्व में दुनिया भर के कई उत्पीड़ित समाजों द्वारा लोगों को संगठित करने की गांधीवादी तकनीक को सफलतापूर्वक नियोजित किया गया है, जो एक स्पष्ट प्रमाण है। महात्मा गांधी की निरंतर प्रासंगिकता के लिए। दलाई लामा ने कहा, "आज विश्व शांति और विश्व युद्ध के बीच, मन की शक्ति और भौतिकवाद की शक्ति के बीच, लोकतंत्र और अधिनायकवाद के बीच एक बड़ा युद्ध चल रहा है।" इन बड़े युद्धों को लड़ने के लिए ही समकालीन समय में गांधीवादी दर्शन की आवश्यकता थी।

निष्कर्ष

वर्तमान युग के सामाजिक जीवन में गांधीवादी विचारधारा की आवश्यकता निर्विवाद है। जब हम समसामयिक सामाजिक चुनौतियों से निपट रहे हैं तो महात्मा गांधी के सिद्धांत और विचार प्रासंगिक बने हुए हैं। गांधीवादी विचारधारा अहिंसा, सामाजिक न्याय, स्थिरता, सशक्तिकरण, नैतिक नेतृत्व और सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि और मार्गदर्शन प्रदान करती है। संघर्षों, हिंसा और असहिष्णुता से चिह्नित दुनिया में, अहिंसा का सिद्धांत संघर्षों को शांतिपूर्ण ढंग से हल करने और समझ को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली विकल्प प्रदान करता है। सामाजिक न्याय और समानता के गांधीवादी सिद्धांत हमें अधिक समावेशी और न्यायसंगत समाज की दिशा में काम करते हुए भेदभाव, असमानता और हाशिए पर जाने को संबोधित करने के लिए प्रेरित करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. फिशर, एल. (2002)। गांधी: एक आत्मकथा. बीकन प्रेस.
2. अय्यर, आर. (1983). महात्मा गांधी के नैतिक और राजनीतिक विचार। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।
3. पारेख, बी. (2013)। गांधी: एक बहुत संक्षिप्त परिचय. ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।
4. पिल्लई, आर. (2016)। गांधीवादी सिद्धांत और आधुनिक विश्व में उनकी प्रासंगिकता। जर्नल ऑफ इंडियन फिलॉसफी, 44(1), 129-147।
5. राधाकृष्ण, एम. (2008)। लैंगिक समानता पर गांधीवादी परिप्रेक्ष्य। इंडियन जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज, 15(2), 201-216।
6. शर्मा, एस. (2004). सतत विकास के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 39(36), 4016-4021।
7. शेपर्ड, एम. (2005). गांधी टुडे: महात्मा गांधी के उत्तराधिकारियों की कहानी। आंतरिक परंपराएँ।
8. बरुआ, आर. (2018)। 21वीं सदी में गांधीवादी दर्शन और अहिंसा। जर्नल ऑफ़ पीस एजुकेशन, 15(2), 195-210।
9. बसु, ए. (2010)। गांधीवादी नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व। जर्नल ऑफ़ ह्यूमन वैल्यूज़, 16(2), 125-134।
10. गांधी, एम.के. (1948)। सत्य के साथ मेरे प्रयोगों की कहानी. बीकन प्रेस.